SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-4, खण्ड-3, अक्टूबर - दिसम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

रानी अवंती बाई लोधी का संघर्ष: एक ऐतिहासिक विश्लेषण

बृजेश तिवारी

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

स्वतंत्र भारत का स्वतंत्रता संघर्ष वीरों और वीरांगनाओं के बलिदान की अमर गाथा से भरा पड़ा है। उन्हीं वीर बलिदानियों के शौर्य और साहस का प्रतिफल है कि आज हम स्वतंत्रता की 79वीं वर्षगांठ भी मना रहे हैं। विडंबना यह है कि इन वीर महापुरुषों एवं बलिदानी वीरांगनाओं में से कुछ के बलिदान को लोगों ने भुला दिया है ऐसी ही प्रेरणादाई और असाधारण साहस और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाली एक बलिदान की अद्वितीय मिसाल रानी अवंती बाई लोधी भी थी। प्रस्तुत शोध पत्र रानी अवंती बाई लोधी के संघर्ष विश्लेषण के उद्देश्य एवं मध्य प्रदेश की धरती की वीरांगनाओं में से एक ऐसी स्त्री पात्र के संघर्ष को रूपायित करना जिनके ऊपर अभी तक बहुत लोगों को जानकारी ही नहीं है, जिसमें विद्वजनों को रानी अवंतीबाई लोधी के संघर्ष और त्याग से लोगों को प्रेरणा प्राप्त होती रहे।

शब्द बीज

संग्राम, वीरांगनाओं, राष्ट्रीय भावना, मातृभूमि, उपनिवेशवाद, हड़प नीति, क्रांति, सहायक संधि, सांस्कृतिक अस्मिता।

प्रस्तावना

यह शोध पत्र ऐसे काल के विश्लेषण पर आधारित है जब भारत पर ब्रिटिश कंपनी के औपनिवेशिक नियम और कानून का बोलबाला था। यह सर्वविदित है कि औपनिवेशिक शासन में मातृदेश अपने उपनिवेश का किस प्रकार शोषण करते थे, उन्हें थोड़ा सा ही अन्देशा नहीं होता था कि उससे प्रभावित लोगों की क्या वेदना होगी - ऐसे में उन तमाम परिस्थितियों को समेकित

करने पर ही क्रांति का जन्म होता है और क्रांति बड़े बदलाव को प्रेरित करती है। चूँकि ब्रिटिश अपने साम्राज्यवाद की भावना से भारतीय रियासतों को किसी ने किसी प्रकार से हड़पने में लगी थी जिसके लिए डॉक्ट्रिन ऑफ़ लैप्स जैसे नियम ने देशी रियासतों को आग बबूला कर दिया, इसी के विरोध एवं अपनी प्रजा की रक्षा के लिए रानी ने ब्रिटिश सत्ता के विद्रोह का नेतृत्व किया। यह शोध पत्र इसलिए भी जरूरी हो जाता है की रानी अवंती बाई का बलिदान इतिहास में सीमित स्वरूप में ही प्रदर्शित किया गया। ज्यादातर पुस्तकें उनको एक वीरांगना की रूप में ही याद करती है, जबकि रानी अपने काल और तात्कालिक समय में उनके मूल्यांकन से कहीं आगे थी इन्हीं कारणों से रानी अंवतीबाई का जीवन संघर्ष, शिक्षा, सामाजिक परिवेश, बहुआयमी दृष्टिकोण, दूरदर्शी सोच उनके बलिदान की प्रेरणा एवं नारी सशक्तिकरण जैसे प्रश्नों का विश्लेषण कर शोध के महत्व को स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों के अंतर्गत ब्रिटिश रिपोर्ट, लोककथाएं, समकालीन, पुस्तकों, भारतीय इतिहास के संदर्भ पुस्तकों के अध्ययन और विश्लेषण से प्राप्त किया गया है साथ ही रानी अवंतीबाई लोधी के बारे में शोध के लिए पुस्तकों का अध्ययन कर उनके संघर्ष को नई दृष्टि प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

शोध विस्तार

रानी अवंतीबाई लोधी का जीवन संघर्ष एवं बलिदान से ही प्रेरित नहीं था अपितु उनमें परंपरागत स्त्री चरित्र की वैचारिकता को तोड़ने तथा महिला को शक्ति के रूप में चित्रित करने के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक विमर्श के लिए प्रेरित करने का अवसर भी प्रदान करता है। आज के समाज में जब हम नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं या महिला नेतृत्व की बात करते हैं तो रानी अवंतीबाई लोधी और भी प्रासंगिक हो जाती है। रानी अवंती बाई के जीवन संघर्ष का समग्र अध्ययन करने से पहले तात्कालिक पृष्ठभूमि का अवलोकन अति आवश्यक हो जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में आने वाली व्यापारिक कंपनियों में सभी को हराकर तथा उन्हें कुछ क्षेत्र तक बांधने के उपरांत ब्रिटिश कंपनी ने जिस विस्तारवादी नीति का उपयोग किया और सीधे-साधे भारतीयों में फूट डालने का कार्य कर उनकी शक्ति को तोड़ने का प्रयास किया इसी का पहला शिकार बना बंगाल। सन् 1757 के प्लासी के युद्ध ने यह तय कर दिया कि भारत को जीतने के लिए धूर्तता, चालाकी और षडयंत्र के साथ वादा खिलाफी बहुत जरूरी है। इन्हीं नीतियों से ब्रिटिश कंपनी ने बंगाल, बिहार, ओडिसा, मैसूर को हस्तगत कर टूटते हुए मराठों पर बार किया वह भी 1817 तक पूरी तरह सभी धरासाई हो गया। दूसरी तरह ब्रिटिश गवर्नर जनरलों की नीतियां, सहायक संधि, घेरे की नीति, शक्ति संपन्नता की नीति ने भारतीय रियासतों को कमजोर बना दिया। ऐसे में हड़प नीति ने ब्रिटिश अधिकार को और मजबूत कर दिया। मध्यप्रदेश की विभिन्न रियासतों पर भी ब्रिटिश उपनिवेश की शक्ति का डंडा चला ऐसे में रामगढ़ रियासत कहां अछूता रहता।

रामगढ़ रियासत मध्यकाल में गोंडवाना रियासत का हिस्सा था, जहां गौंडवाना राजाओं का अधिकार था बाद में लोधी वंश के सामांतों ने इस पर अपना कब्जा कर लिया। चूँकि साम्राज्य में अराजकता आ गई थी ऐसे में रामगढ़ की बागडोर गंजी सिंह को प्रदान किया गया। इस प्रकार गंजी सिंह रामगढ़ रियासत के संस्थापक थे जिनकी मृत्यु के उपरांत प्रांत उनके बड़े बेटे राज सिंह लोधी गद्दी पर बैठे। राजसिंह के बाद विक्रमादित्य सिंह रामगढ़ के राजा बने। बचपन में ही उनकी शादी जुझार सिंह की पुत्री अवन्तिबाई बाई लोधी से कर दिया गया था।

रामगढ़ रियासत की भौगोलिक दशा

रामगढ़ मध्य प्रदेश के डिण्डोरी जिले में छोटा सा गांव है, जो रामगढ़ रियासत की राजधानी थी। वही रामगढ़ राज्य का अधिकांश भाग पहाड़ और पठार था जो नर्मदा और बंजर नदी के वनों और प्राकृतिक दशाओं से आच्छादित था। इसके चारों तरफ छोटी-बड़ी विंध्याचल और सतपुड़ा की पहाड़ियां उसे दुश्मन की पहुंच से दूर करती थी। इसी कारण था कि अंग्रेज इस भू-भाग का सर्वे करवाने के लिए स्थानीय लोगों से संपर्क किया तब जाकर उसे इस स्थान विशेष की जानकारी

प्राप्त हो पायी। 1842 में कैप्टन वाडिंगटन के सर्वे के अनुसार इस राज्य के दो केन्द्र थे सुहागपुर और सहपुरा।

रानी अवंती बाई लोधी का जीवन परिचय

रानी अवंती बाई लोधी का जन्म 16 अगस्त 1831 को मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के मनकेहणी नामक गांव में हुआ था इनके पिता जुझार सिंह लोधी एक जिमींदार थे। जिस कारण यह परिवार लोधी समाज में प्रतिष्ठित और संपन्न परिवार था। रानी अवंतीबाई को जन्म से ही शिक्षा एवं संस्कार के साथ-साथ सैन्य शिक्षा भी प्रदान कराई गई थी। ऐसी कहावत है कि पूत के पांव पालने में ही दिखाई पड़ने लगते हैं। अर्थात अवंतीबाई बचपन से ही बहुत समझदार धार्मिक, नैतिकता के साथ मातृभूमि के प्रति समर्पण से प्रेरित थीं। चूंकि रानी का जीवन ग्रामीण पृष्ठभूमि से उपजा था जिस कारण वह खेलकूद, घुड़सवारी, तीरंदाजी और अन्य कौशल में पंरागत थी। उनकी मां एक धर्मपरायण महिला थी। इस कारण रानी अंवतीबाई को आदर्श गुणों का पाठ भी पढ़ाया गया। काल और परिस्थितियों के साथ रानी में बहुत से ऐसे गुणों का समावेश हुआ जिसके कारण वह आज भी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। विडंबना इस बात की रही कि 19वीं शताब्दी का भारत परंपरा और कुरीतियों से परिपूर्ण था, जिसमें महिलाओं को सीमित दायरे में रहकर ही जीवन यापन करना पड़ता था। ऐसे में समाज से ऊपर उठकर किसी परिवर्तन को संपादित करना आसान नहीं था। जिस कारण से पिता ने कम उम्र में ही इनका विवाह रामगढ़ रियासत के राजा विक्रमादित्य से कर दिया।

चूंकि रानी और विक्रमादित्य दोनों लोधी जाति के दो प्रभावशाली शाखाओं से संबंधित थे, इसलिए राजा इनको प्रशासन में भाग लेने के लिए प्रेरित भी किया करते थे, दूसरे रानी अवंती बाई पिता के घर से ही शासन के कुछ गुणों से अवगत होकर आयी थी इसलिए उन्हें प्रशासन में कार्य करने में कोई हिचकीचाहट नहीं होती थी। राजा विक्रमादित्य 1849 में बीमार हो जाते है और 1851 उनकी मृत्यु हो जाती है। उस समय उनके दो पुत्र अमानसिंह और शेरसिंह दोनों अल्पवस्यक थे। ऐसे में अवंतीबाई ने अमानसिंह की ओर से राज्य का कार्यभार अपने हाथों में ले लिया। अपने राजनीतिक सूजबूझ से उन्होंने सभी जमींदारों को एक सूत्र में बांधने का पूरा

प्रयास किया। 1857 की क्रांति में ब्रिटिश हुकुमत को लगने लगा कि पहले मध्यभारत से उठते हुए विद्रोही शक्ति को तोड़ने की कोशिश की जाए, क्योंकि रानी का नेतृत्व कौशल ठाकुरों, जमींदारों और तालुकेदारों को एक कर रहा था। इसी बीच रानी मंडला पर अधिकार कर लेती हैं। मार्च 1858 को कैप्टन बांडिगटन् के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने रामगढ़ को तीनों तरफ से घेर लिया। 13 मार्च 1858 को नरई नाले के पास हुये भयंकर युद्ध में रानी ने अपने जीवन की अंतिम शक्ति के साथ युद्ध का आगाज किया, लेकिन संख्या और सैन्य बल में कमजोर होने के कारण एवं रीवा नरेश की अंग्रेजों की तरफ सहयोग मिल जाने से रानी पूरी तरह घिर गई। ऐसे में निज गौरव एवं मातृभूमि के गौरव की रक्षा करने के लिए उन्होंने ने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में रानी अवंती बाई लोधी की भूमिका

19वीं शताब्दी के मध्य विश्व के कई भागो में विद्रोह के सुर दिखाई पड़े जैसे मध्य यूरोप में 1848 की क्रांतियां, चीन में तायपिंग विद्रोह और उत्तरी भारत में 1857-58 का विद्रोह। इन सभी विद्रोहों में पारिस्थितिकीय संबंध भले ना हो लेकिन स्वरूप, फैलाव और परिणाम में समानता दिखाई पड़ती है।

भारत में यह विद्रोह 10 मई 1857 को मेरठ से आरंभ हुआ, जब चर्बी वाले कारतूत के प्रश्न पर सैनिकों ने ब्रिटिश अधिकारियों को गोली मार दी और अपने साथियों को रिहाकराकर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। 11 मई को दिल्ली की सड़कों पर मेरठ से आए सिपाहियों के एक झुण्ड ने चुंगी के अंग्रेजी दफ्तर पर आग लगाते हुए दिल्ली के लाल किले की तरफ बढ़ा। कुछ ही समय में दिल्ली पर कब्जा होते ही उत्तर भारत - दक्षिण में मद्रास, पूर्वी क्षेत्र उड़ीसा तथा मध्य भारत में इस विद्रोह की आग फैल गई। जिसमें कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, बरेली, जगदीशपुर, झांसी, जैसे क्षेत्र अधिक तपीस महसूस कर रहे थे। उसी विद्रोह की चिंगारी मंडला, डिंडोरी में भी पहुंची, जिसका नेतृत्व अवंती बाई लोधी ने किया। चूंकि विक्रमादित्य की देहावसान के बाद रानी के दोनों पुत्र बहुत छोटे थे, इसलिए ब्रिटिश कंपनी डलहौजी की हड़प नीति के तहत रानी को प्रतिनिधि संरक्षिका मानते हुए रियासत की बागडोर जबलपुर के ब्रिटिश अधिकारी के

हाथों शौंप दिया। इस कारण रानी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी क्षमता का परिचय देते हुये विद्रोह का नेतृत्व सभांला। उन्होंने इसे एक सिपाही विद्रोह नहीं माना बल्कि वह इसे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष के रूप में देखती थीं, साथ ही एक स्वतंत्र भारतीय राज्य की कल्पना भी की। उन्होंने रामगढ़ में एक विशाल जनसभा का आयोजन किया, जिसमें बोलते उन्होंने कहा कि ''मैं भारत माता की संतान हूं और जब तक एक सांस बाकी है तब तक अपनी मातृभूमि की रक्षा करूंगी। जो इस अन्याय के विरुद्ध खड़ा नहीं होता। वह केवल गुलामी को आमंत्रण देगा'' इसी के साथ रानी अंवतीबाई माई अवंती बाई के नाम से प्रसिद्ध हुई।

रानी ने सैन्य व्यवस्था के लिए 25,000 ग्रामीणों की एक सेना तैयार की उन्होंने इन टुकडियों को पारम्परिक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित ही नहीं किया अपितु उनको पांच भागों में विभाजित कर गौंड आदिवासी, लोधी सरदार, किसान बटालियन, महिलाओं योद्धादल, खूफिया दल इत्यादि। साथ ही इन्हें गुरिल्ला युद्ध तकनीकि से प्रशिक्षित भी किया। इसीक्रम में रानी ने मंडला की अंग्रेजी छावनी, बिछिया, ब्रिटिश टुकड़ी पर धावा भी किया। इन छोटे- बड़े धावों में रानी की गति इतनी तीव्र थी कि ब्रिटिश अधिकारी भी हतप्रभ हो गये एक ब्रिटिश अधिकारी डब्लू. आर. हिक्की लिखता है कि ''रामगढ़ की रानी अत्यंत साहसी चतुर और जनसमर्थन से पूर्ण है उसकी सेना पारंपरिक है। परंतु युद्ध कला में निपुण हैं। यदि उन्हें शीघ्रता से दबाया नहीं गया तो यह विद्रोह व्यापक रूप ले सकता है।'' रानी अवंती बाई लोधी ने भारत के प्रथम सफल स्वतंत्रता संघर्ष में जन समर्थन को जोड़ने का भरसक से प्रयास किया। जिसका कारण था उनकी स्पष्ट विचारधारा स्वराज्य और समान न्याय की स्थापना के साथ स्त्रियों की समुचित भागीदारी से रानी की लोकप्रियता इतनी बढ़ गई थी कि लोग उन्हें बुंदेलखंड की रानी लक्ष्मीबाई कहने लगे। धीरे-धीरे ही सही लोगों का जुड़ाव उनसे बढ़ रहा था। जनता ब्रिटिश अधिकारियों को कर देने से मना कर रही थी।

ब्रिटिश रेजिडेंट को लगने लगा था कि अधिक से अधिक सैन्यशक्ति का प्रयोग कर रानी के बढ़ते प्रसार को रोका जाना चाहिए नहीं तो विद्रोह और व्यापक हो जायेगा। जिसका परिणाम था कि जबलपुर, सागर और नरसिंहपुर की छावनी से सैन्य बल बुलाया गया। रानी की सेना पहाड़ी और जंगलों से अंग्रेजी सेना का प्रतिकार कर रही थी। अंग्रेजों ने रानी को आत्मसमर्पण

करने के लिए दबाव डाला। अंग्रेजों ने रामगढ़ के कई गांवों को जला दिये जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए लेकिन रानी ने आत्मसमर्पण नहीं किया।

मार्च 1858 में अंग्रेजों ने 3 तरफ से रानी को घेर लिया रसद के आवागमन बंद कर दिये गए अब संघर्ष अधिक कठिन प्रतीत हो रहा था। वहीं नरई नाले के पास 13 मार्च 1858 को स्वाभिमान की रक्षा करते हुए स्वयं के कटार से वीरगति को प्राप्त किया।

"नरई के घाट पर माई गिरी

अंग्रेज देख भौंचक खड़े

सिंहनी मरी पर सिर न झुका

मिट गई पर दास न बने"

इतिहाकारों ने स्पष्ट कर दिया /देना चाहा कि रानी का संग्राम ग्रामीण/ आदिम पृष्ठ भूमि पर होते हुए भी जन आंदोलन की शक्ल ले रहा था। जो उस आंदोलन की मांग थी, क्योंकि कालांतर के जितने आंदोलन हुए उनमें जनभागीदारी बहुत महत्वपूर्ण थी। अर्थात जन-जन तक विद्रोह की चिंगारी पहुंचे तभी क्रांति की ज्वाला तीव्र होती है। और वह अंग्रेजी दानव को भस्म कर सकती थी। रानी अवंती बाई लोधी का संघर्ष एक क्षेत्र विशेष तक भले ही सीमित रहा हो। लेकिन जनचेतना सामाजिक उत्थान और स्वतंत्रता के उच्च आदर्शों के कारण यह राष्ट्रीय रूप ले रहा था। जिसमें आसपास के ताल्लुकेदार जमींदार तथा ठाकुरों की संख्या बढ़ रही थी। रानी की रणनीति इतनी प्रभावशाली थी कि ब्रिटिश कमांडर कैप्टन वाडिंगटन वर्टन ने इस बात की अपनी रिपोर्ट में व्यतीत किया है की रानी अवंती बाई की सेना संगठित नहीं थी परंतु नेतृत्व इतना प्रभावी और उसकी रणनीति इतनी अप्रत्याशित थी। कि हमारे सैनिक भी चकित हो जाते थे। रक्षा विशेषज्ञ कर्नल एम. के सिंह मानते हैं कि "आधुनिक सैन्य स्कूलों में जिस गुरिल्ला युद्ध की होती है उसकी जड़े रानीअवंती बाई जैसे योद्धा की रणनीतियों में दिखाई पड़ते हैं"। रानी का संघर्ष सैन्य प्रतिरोध तक ही सीमित नहीं था अपितु यह नारी चेतना में संघर्ष एवं करूणा का सामंजस्य, आदिवासी समाज का गौरव जागरण, आत्मनिर्भर गांव की

मिशाल धार्मिक सहिष्णुता तथा सामाजिक सामंजस्य, एवं महिला नेतृत्व कौशल ज्वलंत प्रमाण भी प्रस्तुत करता है।

इतिहास में रानी अवंती बाई की योगदान की अवहेलना क्यों?

भारतीय इतिहासकार जो आधुनिक भारत इतिहास को अपना विषय बनाया उनके लेखन में मध्यभारत की इस वीरांगना का नामउल्लेख भी नहीं है जैसे- विपिनचंद्र, बी.एल. ग्रोवर इत्यादि। अब प्रश्न उठता क्यों?

1. रानी अवंती बाई लोधी के राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान ही नहीं किया गया। जो रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हजरत महल को प्रदान किया गया। पुन: बताते चलें की जुलाई 1857 तक इंदौर तक का क्षेत्र प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष की चिंगारी से धधक रहा था रानी अवंती बाई ने भी क्रांति में भाग लिया जिसकी सूचना जबलपुर के कमिश्नर को प्राप्त हुई तब तक रानी ने मंडला के कमिश्नर कैप्टन वाशिंगटन को हराकर मंडला पर कब्जा कर लिया था मंडला डिस्टिक डिस्ट्रिक गजेटियर में इस विद्रोह का स्पष्ट उल्लेख भी किया गया है।
2. अगर सूक्ष्म-अवलोकरन किया जाए तो रानी के विद्रोह को ज्यादा प्रचारित न करके ब्रिटिश गवर्नमेंट ने आदिवासी और मध्य भारत में विद्रोह की तीव्रता को रोकने को प्रयास किया है जिससे आज तक रानी को इतिहास में वह स्थान नहीं मिल पाया जो उनको प्राप्त होना चाहिए।

निष्कर्ष

"भाइयों! जब भारत मां गुलामी की जंजीरों में बंधी हों तब हमें सुख से जीने का कोई हक नहीं। मां को मुक्त कराने के लिए ऐशोआराम के तिलाजंलि देनी होगी खून देकर ही आप अपने देश को आजाद करा सकते हैं''। ''रानी अवंती बाई लोधी" ऐसे संबोधन अनायास ही नहीं निकलते हैं, वह भी उन्नीसवीं शताब्दी के छठे में दशक में जब अधिकतर इतिहासकार भारत में राष्ट्रवाद की उद्भव पर भी प्रश्नचिंह लगाते हैं। भारत माता को गुलामी की जंजीरों में बंधे होने का मतलब पूरे भारत की गुलामी से हैं जिसे स्वतंत्र करने की मांग रानी अवंती बाई लोधी द्वारा उठाई जा

रही थी। वहीं दूसरी तरफ वह पहली महिला थी जिन्होंने अंग्रेजी से पीछे भागने पर मजबूर कर दिया। अतः आवश्यकता है ऐसी प्रेरणादाई वीरांगनाओं के कृत्यों को सामने लाने की जिन्होंने देश को आजादी के लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. शुक्ल आर. एल. आधुनिक भारत का इतिहास हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय 2006 पृष्ठ- 238-239, 248
2. चंद्र विपिन, मुखर्जी मृदुला, पानिकर क.न. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष - 2015 पृष्ठ 1-2
3. चौपड़ा रितिका (19 मई 2012) NCERT ने राजनीतिक दबाव में रानी अवंतीबाई लोधी को स्कूली पाठ्य पुस्तकों में शामिल किया इंडिया टुडे 25 सिंतबर 2019
4. नारायण (2006) उत्तरभारत में महिला नायक और दलित दावेदारी संस्कृति पहचान और राजनीति पृष्ठ संख्या 26,46,79,86
5. उद्दे अमर सिंह म.प्र. में स्वंतत्रता आंदोलन 1857 - 1947 पृष्ठ संख्या 44,45, 310,311
6. नरवरिया डॉ.ए. एस., रतन डॉ. के. वीरांगना महारानी अंवतीबाई लोधी का एक विराट व्यक्तित्व पृष्ठ संख्या 98
7. धामा तेजपाल सिंह - रानी अवंतीबाई - 2019 पृष्ठ संख्या 38